International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

शहरी एवं गामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन

जुगनू कुमार

शोधार्थी, शिक्षा संकाय,

श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, पचामा (सीहोर)

प्रस्तुत शोध पत्र में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र को किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 100 छात्राओं (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) का चयन कर उन पर 'किशोरावस्था समस्या मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अतंर पाया गया।

किशोरावस्था को जीवन की बंसत ऋतु माना गया है। यह अवस्था भावी जीवन के निर्माण की अवस्था है। इस काल में किशोरों की स्थिति मदमस्त पवन के प्रवाह की भाँति होती है। यह अवस्था नये वृक्ष की कोमल शाखा की तरह होती है जिसे किसी भी दिशा में सरलता से मोड़ा जा सकता है। इस अवस्था में किशोरों में तीव्र गति से परिवर्तन आते हैं जिस कारण से उनका ध्यान शिक्षा से हटता है, अतः इस अवस्था में माता–पिता एवं अध्यापकों का संपूर्ण ध्यान इस ओर रहता है कि किशोरों का विभिन्न क्षेत्रों में समायोजन बेहतर हो सके एवं वे इस अवस्था में आने वाली समस्याओं के कारण पथभ्रष्ट न हो जाएं क्योंकि किशोर ही देश का भविष्य हैं। किशोरावस्था में मानसिक, शारीरिक व संवेगात्मक रूप से अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं इसलिए **स्टेनले हॉल** ने इस अवस्था को तनाव, तूफान तथा संघर्ष का काल कहा है। इसे संक्रमण काल, विचारों के भूचालों से भरा काल भी कहते हैं। किशोरावस्था को जीवन का सर्वाधिक कठिन और कोमल काल माना जाता है। यह अवस्था ही उन्हें जीवन में उन्नति के मार्ग पर ले जाती है। अतः किशोरावस्था का जीवन में अत्यधिक महत्व होले के कारण ही शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की समस्याओं का अध्ययन करना बहुत ही सामयिक प्रतीत हो रहा है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **पेंटिसन और पटेल (1966)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी लड़कियों को ग्रामीण लड़कियों की अपेक्षा अधिक समस्याएं थीं। **वीरेश्वर, पी. (1979)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के पारिवारिक, शैक्षिक, सामाजिक, व्यक्तिगत, संवेगात्मक समस्याओं के क्षेत्र में सार्थक अंतर था तथा ग्रामीण छात्राओं में समायोजन के उपरोक्त क्षेत्रों में अधिक समस्याएं पायी गयीं। **पाण्डे, बी.बी. (1979)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि ग्रामीण विद्यार्थियों में संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य समायोजन, शहरी विद्यार्थियो से बेहतर पाया

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

गया। शहरी विद्यार्थियों को विद्यालयीन, संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य समायोजन के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ा। **शाह, वीना (1989)** ने अपने अध्ययन में पाया कि संतुष्टिजनक पारिवारिक वातावरण वाले शहरी किशोरों का गृह समायोजन संतुष्टी जनक पारिवारिक परिवेश वाले ग्रामीण किशोरों से बेहतर पाया गया, शहरी छात्रों में उनके गृह समायोजन के स्तर के निर्धारण में पारिवारिक परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका पाई गई। **देवेंद्र कुमार तथा आर.पी.सिंह (2005)** ने अपने अध्ययन में पाया कि रहवास की प्रकृति किशोर एव किशोरियों के समायेजन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। शहरी किशोर व किशोरियों का गृह, संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन ग्रामीण किशोर एवं किशोरियों की तुलना में उच्च पाया गया। **भारती, ए.के. (2010)** के अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि शहरी एव ग्रामीण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व समायोजन तथा समायोजन के घटकों में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण विद्यार्थियों में स्वास्थ्य, गृह, सामाजिक, संवेगात्मक, शैक्षिक एवं समग्र समायोजन शहरी विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया। **उपाध्याय (2011)** ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी व ग्रामीण छात्राओं की सामाजिक व व्यवसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर था।

उद्देश्य :–

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/ व्यावसायिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/ व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अतंर नहीं पाया जायेगा।

उपकरण :–

किशोरावस्था समस्या मापनी – आशीष बाजपेयी, हरगोविंद शुक्ला एवं अमित गुप्ता

विधि :–

सर्वप्रथम भोपाल जिले के माध्यमिक विद्यालयों की सूची पाप्त की गई तथा इस सूची में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के अंतर्गत लाटरी विधि द्वारा शहरी क्षेत्र के दो विद्यालयों एवं ग्रामीण क्षेत्र के दो विद्यालयों का चयन किया गया तथा इन विद्यालयो की कक्षा नवमों व दसवीं में अध्ययनरत् 100 छात्राओं (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर सामूहिक रूप से 'किशोरावस्था समस्या मापनी' का प्रशासन किया गया एवं किशोरावस्था समस्या मापनी के तीनों क्षेत्रों की समस्याओं का अलग अलग फलांकन किया गया। प्राप्तांकों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

परिणामों का विश्लेषण :–

परिकल्पना : शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक/ सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अतंर नहीं पाया जायेगा।

तालिका

'kgjh ,oa xzkeh.k {ks= dh fd'kksjkoLFkk dh Nk=kvksa dh laosxkRed@lkekftd@ O;kolkf;d leL;kvksa laca/kh rqyukRed ifj.kke

समस्या का प्रकार	रहवास की प्रकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	'पी' मान
संवेगात्मक	शहरी	50	9.44	2.94	2.57	< 0.05
	ग्रामीण	50	10.98	3.12		
सामाजिक	शहरी	50	6.36	2.88	3.00	< 0.01
	ग्रामीण	50	8.04	2.73		
व्यावसायिक	शहरी	50	5.84	1.81	2.29	< 0.05
	ग्रामीण	50	6.78	2.28		

स्वतंत्रता के अंश – 98 0.05, 0.01 स्तर के लिये निधार्रित न्यूनतम मान –1.98, 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं के मध्य संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि तीनों समस्याओं के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.57, 3.00, 2.29 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05, 0.01, 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98, 2.63, 1.98 की अपेक्षाकृत अधिक हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं के मध्य संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में संवेगात्मक/ सामाजिक/व्यावसायिक समस्याएँ, शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गयी।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं की संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अतंर नहीं पाया जायेगा '' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की किशोरावस्था की छात्राओं के मध्य संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में संवेगात्मक/सामाजिक/व्यावसायिक समस्याएँ, शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गयी।

परिणामों की व्याख्या :–

शहरी एवं गामीण क्षेत्र के किशोरावस्था की छात्राओं की विभिन्न समस्याओं (संवेगात्मक, सामाजिक एवं व्यावसायिक) में सार्थक अंतर पाया जाना तथा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में उपरोक्त समस्याएँ शहरी क्षेत्र की छात्राओं से अधिक पाया जाना इस बात का घोतक है कि शहरी क्षेत्र के अभिभावक अपने पाल्यों को ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों की तुलना में बेहतर वातावरण देने का प्रयास करते हैं। साथ ही शहरी क्षेत्र के अभिभावक अधिक जागरूक होने के कारण इस बात को अधिक बेहतर तरीके से जानते हैं, कि यदि उन्हें अपनी व अपने बच्चो की महत्वाकांक्षाआ को पूरा करना है, व उसे एक सफल नागरिक बनाना है, तो उसके लिये उन्हें अपने परिवार का वातावरण इस प्रकार का बनाना होगा, जिससे कि उनके पाल्य का उचित समायोजन हो सके व उसके व्यक्तित्व के सकारात्मक पहलुओं का विकास हो, साथ ही उसकी शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि हो। ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावक भी अपने पाल्यों को बेहतर शिक्षा दिलाने का प्रयास तो करते हैं, परंतु वह इस मनौवैज्ञानिक तथ्य को बेहतर तरीके से नहीं समझ पाते हैं कि व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक पारिवारिक वातावरण है, यही कारण है, कि वे प्रायः उन सभी कारकों की उपेक्षा करते हैं, जो कि पारिवारिक वातावरण पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। संभवतः यही कारण है कि शहरी क्षेत्र की छात्राओं में, ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में कम समस्याएं दृष्टिगोचर हो रहीं हैं। **वीरेश्वर, पी. (1979), देवेंद्र कुमार तथा आर.पी.सिंह (2005)** के अध्ययनो से पता चलता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों में समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों में समस्याएं, शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी। अतः प्रस्तुत शोध से प्राप्त अधिकांश परिणाम वीरेश्वर, पी. (1979), देवेंद्र कुमार तथा आर.पी.सिंह (2005) के शोध कार्यों से प्राप्त परिणामों के अनुसार हैं।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

1. गुप्ता, एस. पी. (2005) ''सांख्कीय विधियां'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. वालिया, जे.एस. (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें'' पाल पब्लिशर्स, जालंधर।
3. उपाध्याय, हर्षबाला (2011) ''किशोरावस्था की शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन'', लघु शोध प्रबंध, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल।
4. **Bharti, A.K. (2010)** "Personality Adjustment of urban and Rural Adolescents of both the sexes", *Asian journal ofpsychology and education vol 43 No. 7-8 year 2010 Page 32-34*
5. **Pandey, B.B. (1979)** "A Study of adjustment problems of adolsent boys of Deoriya and their Educational Implications", *Ph.D. Edu., Gor. U., in Third Servey of Research in Education (1978-1983), Pg. No. 389*
6. **Pattison, L. and Patel, H.G. (1966)** "Problems of Adolescent Girls in Gujrat State in India., Dept. of Education - Extension, Faculty of Home Science", *M.S.U. Barodra, In Third Survey of Rescerch in Education (1978-1983), Pg. No. - 170.*
7. **SHAH, BEENA (1989),** Home Adjustment of adolescent students : Effect of family climate., Indian Educational Review, Vol., 24 (3), 125-132, In Fifth Survey of Educational Research (1988-92), Vol. - II, Pg. No. 1022
8. **Veereshwar, P. (1979)** "Study of mental health and adjustment problems of college-going urban and rural girls", *Dept. of Psychology, Mee, Univ., (ICSSR financed), in Fourth Servey of Research in Education (1983-1988), Vol. 1, Pg. No. 454-455.*